विचार बिन्दु

घर का मोह कायरता का दूसरा नाम है। –अज्ञात

ज्ञान, समझ, युक्ति

ज्ञान, समझ और युक्ति जीवन के सभी पहलुओं से जुड़े तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। ज्ञान वस्तुत: आंकड़ों से आंकड़ों, या आंकड़ों से सूचना या सूचना से सूचना के संयोग का ऐसा संग्रह है जिसका सन्देश स्पष्ट होता है। ज्ञान के कम से कम तीन प्रकार हैं: शोध आधारित-ज्ञान, अनुभवजन्य-ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान। कार्य-संपादन में इन तीनों का महत्वपूर्ण योगदान है। अच्छा नेतृत्व नवीन ज्ञान को जीवन भर सीखता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं:- थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति, जिसकी बात हम आगे करेंगे, को मॉडलिंग के समकक्ष माना जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है। नवाचार और रचनात्मकता में ज्ञान एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रभावी संचार के लिए ज्ञान भी आवश्यक है। जिन लोगों को किसी विषय की गहरी समझ होती है, वे आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं, और समस्याओं के हल करा सकते हैं। पर ज्ञान से आगे की यात्रा और भी महत्वपूर्ण है।

किसी कार्य को सम्पादित करते समय ज्ञान का उपयोग करने से अनुभव प्राप्त होता है। जीवन के विविध क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते हैं, जिससे ज्ञान से आगे हमारी समझ या विजडम बढ़ती रहती है। विजडम को भारतीय दर्शन में बुद्धिमत्ता, मनीषा, मतिमानता, प्रज्ञा, प्रज्ञता, बुद्धिमानी, ज्ञान, ज्ञान-परिपूर्णता, ज्ञानज्ञता-कर्मज्ञता, समझ आदि कहा जाता है। प्राचीन दृष्टिकोण के साथ ही पिछले पाँच दशकों के दौरान साइंस ऑफ़ विजडम पर अनुसंधान में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। विजडम को परिभाषित करने के अनेक प्रयत्न हुये हैं किन्तु अभी तक सर्वमान्य परिभाषा का निर्धारण नहीं हो पाया है। विजडम व्यक्तित्व की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषता मात्र नहीं है बल्कि यह एक न्यूरोबायोलॉजिकल विशेषता है जो समाजोन्मुखी व्यवहार, भावनात्मक-नियमन और आध्यात्मिकता जैसे विशिष्ट घटकों से मिलकर बनती है। इस बात को आगे और भी स्पष्ट करेंगे।

हाल ही में लोगों में विजडम के घटकों को बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन मेटा-एनालिसिस द्वारा किया गया। इस अध्ययन में ऐसे क्लिनिकल ट्रायल्स को समाविष्ट किया गया जो विजडम बढ़ाने के लिये अभी तक क्रियान्वित किये गये थे। इसमें 7096 व्यक्तियों से जुड़े 57 अध्ययनों के आंकड़े समाहित किये गये थे। विजडम के सभी घटकों से संबंधित आंकड़े तो नहीं मिल पाये किन्तु समाजोन्मुखी-व्यवहार (प्रोसोशलबेहवियर) से संबंधित 29, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) से संबंधित 13 और आध्यात्मिकता (स्पिरिचुअलिटी) से संबंधित 15 अध्ययन शामिल किये गये थे। मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि आध्यात्मिकता, भावनात्मक-नियमन और समाजोन्मुखी व्यवहार को बढ़ाने के लिये किये गये हस्तक्षेप व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं (देखें, ई.ई. ली इत्यादि, जामा साइकेइट्री, 77(9):925-935, 2020)।

शोधकर्ताओं को मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित करने हेतु विजडम बढ़ाने के उपायों पर ऐसे अध्ययन नहीं मिले जो विजडम के सभी घटकों की समग्रता को एकीकृत रूप से समाहित करते हुये किये गये हों। इस मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित समीक्षा के अनुसार विजडम को मापने के लिये कई दृष्टिकोण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये विजडम को दो रूपों में देखा जा सकता है-पहला उपयोगी अंतर सैद्धांतिक बुद्धिमत्ता (थ्योरेटिकलविजडम या जीवन के यथार्थ की समझ; प्रकृति और मानव के रिश्तों की समझ आदि) और दूसरी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (प्रैक्टिकलविजडम / फ्रोनेसिस, सही कारणों के लिये, सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता) सम्मिलित है। इन दोनों प्रकारों में सम्मिलित घटकों को मापने की विधियां और क्षमता वैज्ञानिक विकसित कर चुके हैं। परन्तु सैद्धांतिक ज्ञान (गहन समझ) की तुलना में व्यावहारिक ज्ञान (व्यावहारिक समझ) को प्रश्नावली के माध्यम से अधिक सुगमता से मापा जा सकता है। इस मेटा-एनालिसिस में व्यावहारिक समझ के सम्बन्ध में समाजोन्मुखी व्यवहार और भावनात्मक विनियमन को लिया गया और सैद्धांतिक समझ के संबंध में आध्यात्मिकता को शामिल किया गया। बुद्धिमत्ता के अन्य घटकों से जुड़े इंटरवेंशन वाले अध्ययनों की कमी के कारण निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चितता से निपटने की क्षमता, और सहिष्णुता जैसे घटक अध्ययन में शामिल नहीं किये जा सके। फिर भी जिन तीन घटकों को शामिल कर यह अध्ययन किया गया वह नया रास्ता दिखाने वाला है क्योंकि अध्ययन में सम्मिलित तीनों घटक अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। विजडम जैसे विषय यदि एम्पिरिकल रिसर्च की सीमाओं से परे ना भी हों तो भी काफी चुनौतीपूर्ण हैं।

प्रज्ञा के संबंध में यह बताना भी उपयोगी है कि आध्यात्मिकता इसका एक महत्वपूर्ण घटक है (देखें, डी.वी. जेस्ते इत्यादि, जर्नल ऑफ़ साइकियाट्रिक रिसर्च, 132:174-181, 2021)। आध्यामिकता और धार्मिकता में अंतर समझना जरूरी है। आध्यात्म हमें प्रकृति के समीप ले जाता है। आध्यामिकता व्यक्ति को व्यक्ति के समीप ले जाती है। आध्यामिकता प्राकृतिक तंत्रों के समीप भी ले जाती है। आध्यात्म वस्तुत: आत्मावलोकन और आत्म-समीक्षा के अवसर प्रदान करता है। आत्म-समीक्षा में यह भी शामिल है कि प्रकृति के साथ हमारे क्या संबंध हैं और हमें प्रकृति को बेहतर करने में हमारा क्या योगदान है। धार्मिकता एक अलग विषय है। धर्म की त्रुटिपूर्ण किन्तु बड़ी लोकप्रिय व्याख्या लोगों के बीच में मिलती है। ध्यान दीजिये, आध्यामिकता में किसी एक धर्म के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण नहीं है। आध्यात्मिकता जहां एक और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के जैसा मानने का विचार देती है वहीं दूसरी ओर धर्म की समकालीन स्थिति यह है कि सारा विश्व अलग-अलग जाति धर्म और संप्रदाय में बंट गया है। आत्मवत्सर्वभूतेषु का सिद्धांत आध्यात्म की मूल आत्मा है। दरअसल एक रिलीजियस व्यक्ति आध्यात्मिक भी हो सकता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्ति धर्म के लोकप्रिय स्वरुप के अनुसार धार्मिक भी हो ऐसा आवश्यक नहीं है। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि भारतीय दर्शन में धर्म शब्द का मूल अर्थ उस शब्द से नहीं है जिसे दुनिया रिलीजन कहती है। असल में धर्म का मूल अर्थ व्यक्ति के नियत कर्तव्यों और उनके पालन से है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है। नवाचार और रचनात्मकता में ज्ञान एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रभावी संचार के लिए ज्ञान भी आवश्यक है। जिन लोगों को किसी विषय की गहरी समझ होती है, वे आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं।

प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक साहित्य में भी समझ के वैज्ञानिक स्वरूप देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा गीता का अध्ययन कर उसमें विजडम, प्रज्ञा, ज्ञान आदि पर 10 घटक खोजे गये हैं। इनमें से जीवन का ज्ञान, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) या आत्म-नियंत्रण, इच्छाओं पर नियंत्रण, मध्यम-मार्ग (मॉडरेशन या टेम्पेरेंस) निर्णायकता, आत्मा और उसके विषय में ज्ञान, ईश्वर पर विश्वास, कर्म-योग, आत्म-संतोष, प्राणियों के प्रति दया, दान, योग इत्यादि ऐसे विषय हैं जो केवल दर्शन या धर्म के विषय नहीं हैं बल्कि क्लिनिकल ट्रायल्स में भी उपयोगी पाये गये हैं। वर्तमान और अद्यतन शोध की स्थिति यह है कि विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। इनमें (1) सहिष्णुता एवं वैचारिक विविधता को स्वीकार करना, (2) अनिश्चितता के रहते हुये भी निर्णय लेने की क्षमता, (3) भावनात्मक विनियमन या इमोशनल रेगुलेशन, (4) समाजोन्मुखी व्यवहार या प्रोसोशल बिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता और करुणा आदि शामिल हैं, (5) आत्म-समीक्षा, (6) उचित सलाह देने में तत्परता या सोशल एडवाइजिंग तथा (7) आध्यात्मिकता शामिल हैं। जिस व्यक्ति में यह सभी सातों क्षमतायें (प्रज्ञा के घटक) पाये जाते हैं वह उन परिस्थितियों से बड़ी आसानी से बाहर निकल जाता है जिनमें प्रज्ञा में कमी वाले व्यक्ति उलझ जाते हैं।

वस्तुत: प्रज्ञा का मूल उद्देश्य स्वयं की और समाज की जिंदगी में बेहतरी लाना है। यहां एक प्रश्न उठता है कि यह विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा तो दुधारी तलवार हो सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जिसमें तिकड़मी बुद्धिमत्ता या एविल-विजडम हो। दरअसल ऐसा नहीं होता। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रज्ञा व्यक्ति को सदैव आत्म-नियंत्रित, आत्म-समीक्षक, और समाजोपयोगी ही बनाती है। प्रज्ञावान व्यक्ति अपने जीवन को सदैव बेहतर बनाता है और एक ऐसी आयु प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में सुखायु कहा जाता है। सुखायु के साथ-साथ प्रज्ञावान व्यक्ति एक ऐसी आयु भी प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में हितायु कहा जाता है। सुखायु और हितायु प्रज्ञावान व्यक्ति के लिये ही संभव है। शातिर दिमाग, तिकड़मी या चलता-पुर्जा व्यक्ति प्रज्ञावान नहीं होता। तिकड़म के लिये उसके पास जानकारी बहुत हो सकती है परंतु प्रज्ञाविहीन कोरी जानकारी सुखायु और हितायु नहीं प्रदान कर सकती।

अब हम ज्ञान और समझ से आगे चलकर युक्ति की बात करते हैं जो ज्ञान और समझ से भी आगे समस्याओं के हल का रास्ता है। यह लोगों को लीक से हटकर सोचने और समस्याओं के समाधान हेतु विविध विकल्प देते हुए श्रेष्ठ विकल्प चुनने में मदद करती है। युक्ति एक सार्वभौमिक प्रबंधकीय सिद्धांत है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक, जो युक्ति-व्यपाश्रय सिद्धांत के जनक माने जाते हैं, के अनुसार अनेक कारणों की समग्रता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वर्तमान, भूत और भविष्य, तीनों कालों को जाना जा सकता है। युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25): बुद्धि: पश्यति या भावान्बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेयात्रिवर्ग: साध्यतेयया।। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति के लक्षण और व्यापक सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुत: जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है। एक उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिक महत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है।

दैनिक जीवन में समस्या-समाधान हेतु ज्ञान, समझ और युक्ति एक साथ और उत्तरोत्तर श्रेणीबद्ध रूप दोनों प्रकार से उपयोगी हैं। ज्ञान जानकारी और तथ्य प्रदान करता है जो हमें समस्या को समझने और संभावित समाधानों पर मंथन करने में मदद कर सकता है। समझ हमें पिछले अनुभव और स्थिति के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने में मदद करती है। युक्ति हमें आगा-पीछा देखकर एक जटिल समस्या को छोटे, आसानी से प्रबंधन-योग्य चरणों में तोड़ने में मदद करती है, जिसे समस्या को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए लागू किया जा सकता है। इन तीन बहुआयामी संसाधनों के बिना जीवन में हर क्षण आने वाली जटिल समस्याओं का प्रभावी समाधान निकालना लगभग असंभव हो जाता है।

–अतिथि संपादक
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य में पैंथर, भालू, सांभर, जरख, नीलगाय में इजाफा होने के संकेत

वन्यजीव प्रेमी गणक द्वारा बताए रुझान से प्रजातियों में इजाफा होने के प्रारम्भिक रूझान

सादड़ी, (निसं)। कुम्भलगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य में बुद्ध पूर्णिमा को धवल चांदनी में वाटर हाल पद्धति से अरण्य में निवासरत मांसाहारी, शाकाहारी, रेप्टाइल्स व पक्षी वर्ग की वन्यजीव गणना-2024 सम्पन्न हुई। गणना के प्रारम्भिक रुझानों में अरण्य क्षेत्र में सर्वाधिक जल बिन्दुओं पर भालू, सांभर, हाइना, जंगली सुअर की आवाजाही हुई। वन्यजीव प्रेमी गणक द्वारा बतलाए रुझान व अनुभव से इन प्रजातियों में इजाफा होने के प्रारम्भिक रूझान हैं। डेढ़-दो दर्जन जलस्त्रोत पर पैंथर की दस्तक ने गणक को निराश नहीं किया।

इस बार मचान सहित ट्रेप कैमरा पद्धति भी उपयोग की गई, जिनमें भी उत्साहित करने वाले चित्र कैद हुए। भीषण गर्मी के मध्यनजर गणक की सुविधार्थ विभाग द्वारा विशेष प्रबंध किए गये। विभागीय निर्देशानुसार बुद्ध पूर्णिमा को सुबह आठ बजे से 24 मई सुबह आठ बजे यह वन्यजीव गणना सम्पन्न हुई। अरण्य की 5रेंज झीलवाड़ा, सादड़ी, बोखाडा, देसूरी व कुम्भलगढ़ रेंज में विभाग द्वारा अक्षांश व देशांश मानक अनुसार चिन्हित 146 जलस्त्रोतों पर एक साथ यह गणना हुई। जिसमें 65-70 वनकार्मिकों सहित कुल 300 गणक ने अपनी सहभागिता निर्वहन की।

कुम्भलगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य में बुद्ध पूर्णिमा को वाटर हाल पद्धति से वन्यजीव गणना सम्पन्न हुई।

मचान के अलावा इस बार कुम्भलगढ़ के चिन्हित 40 में से 10 जल बिन्दुओं पर ट्रेप कैमरा लगाए। देसूरी 38 में से 10, सादडी 20, बोखाडा19 में से 5 और झीलवाड़ा 29 में से 20 स्थलों पर ट्रेप कैमरा लगाए गए। गणना के दौरान वनमण्डल राजसमंद उप वन संरक्षक सुदर्शन शर्मा, सहायक वन संरक्षक भैरूसिंह राठौड़, रेंजर रामचन्द्रसिंह राठौड़, रेंजर अरविंदसिंह झाला देसूरी, रेंजर भैरूसिंह राठौड़ झीलवाड़ा, जयंतीलाल गरासिया बोखाडा ने औचक निरीक्षण कर रुझानों की जानकारी ली व आवश्यक दिशा निर्देश दिए। अरण्य में गणना के दौरान वनपाल अन्तर कंवर सोनिगरा, ईश्वरसिंह चौहान, नारायणसिंह राणावत, अभिनव भारती, संजय, दिनेश खराड़ी, सतीश प्रजापत, विरेंद्रप्रतापसिंह ने गणक व वन्यजीव प्रेमियों से सम्पर्क कर उन्हें गर्मी से राहत देने में निम्बू शरबत, ग्लूकोज व इलेक्ट्रोल पाउडर पेयजल सुविधा मुहैया कराई।

अरण्य वन्यजीव गणना गणक द्वारा बतलाए प्रारम्भिक रुझान में भालू, सांभर, हाइना, जंगली सुअर, नीलगाय में इजाफा होने के संकेत दे रहा है। डेढ़ से दो दर्जन जलबिन्दुओं पर पैंथर की दस्तक ने भी निराश नहीं किया। ट्रेप कैमरा में फोटो भी कैद हुए। परशुराम सड़क मार्ग पर एक दर्जन से अधिक भालू, एक मादा भालू दो नन्हे शावक के साथ आई। यहां हाइना, 5-7 सांभर व जंगली सुअर, मुर्गे नजर आए। दो जगह पैंथर ओझल से नजर आए। राणकपुर सड़क मार्ग पर एक जलस्त्रोत पर हाइना का परिवार, एक जलबिंदु पर भालू व पैंथर आया। मोडिया में सांभर, चीतल व जंगली सुअर, झीलवाड़ा रेंज में सर्वाधिक जगह भालू व सांभर, हाइना पहुंचने की सूचना मिली। देसूरी रेंज में पैंथर, भालू, नीलगाय, सांभर व जंगली सुअर सर्वाधिक जल बिन्दुओं पर पहुचने के संकेत मिले। रामचन्द्रसिंह राठौड़ रेंजर सादडीका कहना है कि वन्यजीव प्रेमी गणक, वनकार्मिकों के सक्रिय सहयोग से शांतिपूर्ण ढंग से गणना सम्पन्न हुई। कई जगह हाइना, जंगली सुअर, भालू, सांभर व नीलगाय पहुंचने के संकेत मिले।

भैरूसिंह राठौड़ सहायक वन संरक्षक झीलवाड़ा के अनुसार कहीं से कोई अनहोनी की सूचना नहीं मिली। सभी जगह गणक को उत्साहित करने वाले प्रारम्भिक रुझान मिले।

अरविंदसिंह झाला रेंजर देसूरी के अनुसार बुद्ध पूर्णिमा पर वन्यजीव गणना में पैंथर, भालू, सांभर, नीलगाय सहित विभिन्न प्रजाति के वन्यजीवों में इजाफा होने के रुझान प्राप्त होने पर गणक रोमांचित हुए।

ग्राम सामोद में पेयजल समस्या को लेकर ग्रामीणों ने पंचायत मुख्यालय के बाहर धरना दिया

अघोषित बिजली कटौती से पानी की सप्लाई सुचारु रूप से नहीं होने से लोग परेशान हैं

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। चौमूं उपखण्ड के सामोद कस्बे के कई वार्डों में कई दिनों से चली आ रही पेयजल समस्या का समाधान नहीं होने के कारण आखिरकार शनिवार को ग्रामीणों का सब्र का बांध टूट गया और ग्रामीण पंचायत मुख्यालय के बाहर धरने पर बैठ गये। जलदाय विभाग के कर्मचारियों की लापरवाही के कारण ग्रामीण भीषण गर्मी में पेयजल की गम्भीर समस्या सामना का कर रहे हैं। वहीं कस्बे में अघोषित बिजली कटोती के कारण आमजन परेशान हो रहा है।

अघोषित बिजली कटौती के कारण पानी की सप्लाई बाधित हो रही है। अघोषित बिजली कटोती व पानी की सप्लाई सुचारु रूप से नहीं होने से ग्रामीण परेशान है। वहीं पेयजल समस्या का समाधान नहीं होने पर ग्रामीणों ने कस्बे से गुजरने वाले अजीतगढ़-चौमूं मार्ग पर पानी के खाली मटके लेकर धरने पर बैठे गये।

हाइवे पर धरने की सूचना मिलते ही मौके पर सामोद थाना प्रभारी धर्म सिंह मय जाब्ता पहुंचकर ग्रामीणों को समझाया।

पेयजल समस्या का समाधान नहीं होने पर ग्रामीणों ने पानी के खाली मटके लेकर धरना दिया।

- जलदाय विभाग के कर्मचारियों की लापरवाही से ग्रामीण भीषण गर्मी में पेयजल की गंभीर समस्या का सामना कर रहे हैं
- कनिष्ठ अभियंता ने कहा कि पानी की समस्या का समाधान शीघ्र ही कर दिया जायेगा

थाना प्रभारी के आश्वासन के बाद ग्रामीण हाइवे से हटे। मौके पर जलदाय विभाग की कनिष्ठ अभियंता ज्योति सैनी व कर्मचारी पहुंचे, जिनको महिलाओं ने पेयजल समस्या का समाधान करने की मांग की। वहीं कनिष्ठ अभियंता ज्योति सैनी ने कहा कि पानी की समस्या का समाधान शीघ्र ही कर दिया जायेगा। साथ ही ग्रामीणों ने ठेकेदार के कर्मचारियों की लापरवाही व पेयजल आपूर्ति में लगे टैंकर चालकों की मनमर्जी की बात कही।

गौरतलब है कि एक और भीषण गर्मी के कारण घरों में पानी नही आ रहा है साथ ही अघोषित विधुत कटौती के कारण पेयजल आपूर्ति करने वाली पानी की टंकियां समय पर नहीं भरने के कारण ग्रामीणों को पानी नहीं मिलने के कारण ग्रामीणों पर दोहरी मार का सामना करना पड़ रहा है।

कनिष्ठ अभियंता ज्योति सैनी ने बताया कि पेयजल आपूर्ति की समस्या का समाधान जल्दी ही कर दिया जायेगा। इस दौरान पूर्व सरपंच दिनेश चन्द्र चतुर्वेदी, कय्यूमुद्दीन मंसूरी, बनवारी लाल वर्मा, किशोर कांसोटिया, चम्पा सुनार, जाकिर खान लुहार, विशंम्बर सोनी, शंकर लाल चतुर्वेदी, राजेश सैनी, प्रमोद कुमार बुनकर व गिरिराज प्रजापति सहित सैकड़ों ग्रामीण मौजूद थे।

111 नायब तहसीलदारों की नियुक्ति के आदेश जारी

अजमेर, (कासं)। राजस्व मंडल अजमेर ने राजस्थान में 111 नायब तहसीलदारों की नियुक्ति के आदेश शनिवार को जारी कर दिए। राजस्व मंडल अध्यक्ष राजेश्वर सिंह के निर्देशानुसार राजस्थान राज्य अधीनस्थ सेवाएं संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा 2021 के परिणाम के आधार पर राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर की अनुशंसा एवं राज्य सरकार के अनुमोदन पश्चात राजस्थान तहसीलदार सेवा नियमावली 1956 के नियम 34 के तहत सफल

- 27 से आरआरटीआई अजमेर में लेंगे प्रशिक्षण

रहे अभ्यर्थियों में से 111 को 2 वर्ष की अवधि के लिए परिवीक्षाधीन प्रशिक्षणार्थी के रूप में नायब तहसीलदार के पद पर नियुक्त किया गया है।

राजस्व मंडल निबंधक महावीर प्रसाद ने बताया कि इन प्रशिक्षणाधीन अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण अवधि में विभागीय परीक्षा अनिवार्यत: उत्तीर्ण करनी होगी। प्रशिक्षण के लिए अभ्यर्थी 27 मई को सुबह 9:30 बजे से आरआरटीआई अजमेर में अपनी उपस्थिति देंगे।

उपस्थित होने की तिथि को ही उनकी कार्यग्रहण तिथि माना जाएगा। जिन अभ्यर्थियों ने आधारभूत पाठ्यक्रम पहले से उत्तीर्ण कर लिया है वे आधारभूत पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अंकतालिका कार्यग्रहण के समय आरआरटीआई अजमेर को प्रस्तुत करेंगे। कार्यग्रहण अवधि के साथ दिन पश्चात भी उपस्थिति दर्ज नहीं कराने अथवा विभाग को सूचित नहीं करने वाले अभ्यर्थी की नियुक्ति स्वत: निरस्त समझी जाएगी।

उन्होंने बताया कि सभी 111 अभ्यर्थियों को अजमेर के राजस्व अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान आरटीआई में 6 माह का प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा जिसमें 27 मई से 43 दिवसीय आधारभूत प्रशिक्षण, 9 जुलाई से एक माह का भू प्रबंध प्रशिक्षण, 8 अगस्त से 43 दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण, 20 सितंबर से कृषि प्रशिक्षण, 5 अक्टूबर से 49 दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण (तहसीलों में) दिया जाएगा जबकि 23 नवंबर से सात दिवस तक परीक्षा की तैयारी एवं परीक्षा का आयोजन होगा। इस संबंध में राजस्व मंडल स्तर से आरआरटीआई निदेशक को अभ्यर्थियों की उपस्थिति के समय आवश्यक दस्तावेज प्राप्त करने एवं प्रशिक्षण संबंधी दिशा निर्देश प्रदान कर दिए गए हैं।

राशिफल रविवार 26 मई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र दिन 10:36 तक, साध्य योग प्रात: 8:30 तक, वणिज करण प्रात: 6:33 तक, चन्द्रमा धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से प्रात: 10:36 तक है। राजयोग दिन 10:36 से सांय 6:07 तक है। भद्रा प्रात: 6:33 से सांय 6:07 तक रहेगी। आज चतुरथी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 10:14 पर होगा। आज माँ आनन्दमयी जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:20 से 9:01 तक, लाभ-अमृत 9:01 से 12:24 तक, शुभ 2:05 से 3:46 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:09

मेष
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आज नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

सिंह
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों से मतभेद हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च होगा।

तुला
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कुंभ
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मीन
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।